विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2563, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 12 दिसंबर, 2019, वर्ष 49, अंक 6

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

उट्ठाता कम्मधेय्येसु, अप्पमत्तो विधानवा।
समं कप्पेति जीवकं, सम्भतं अनुरक्खति॥
सद्गृहस्थ के गुण, धम्मवाणी संग्रह पुस्तक से.

– सद्गृहस्थ कामधंधे में उत्साही (कर्मठ) हो, अप्रमादी हो, सावधान हो, धैर्यपूर्वक जीविकोपार्जन करे और अर्जित संपत्ति का कुशल आरक्षक हो।

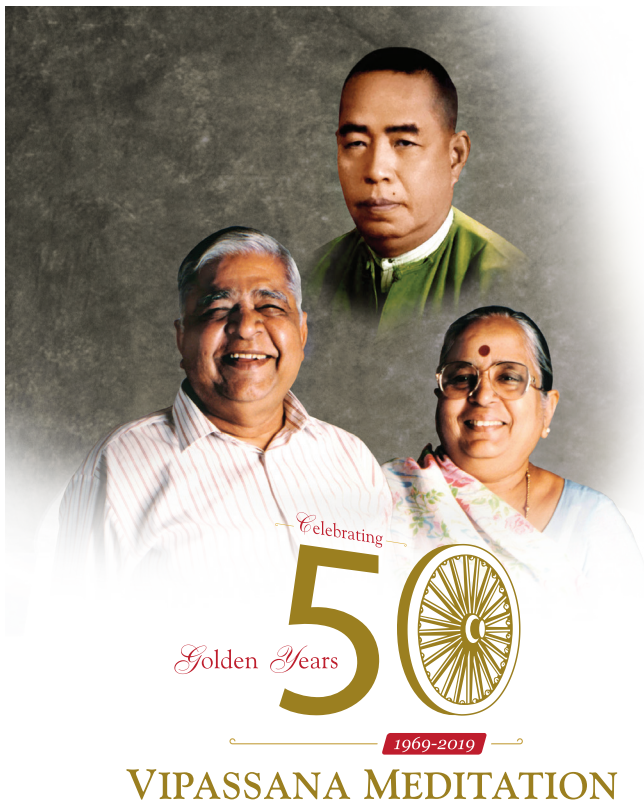

(सयाजी ऊ बा खिन की पद्धति में श्री गोयन्काजी द्वारा विपश्यना शिविर-संचालन के 50 वर्ष (1969-2019) पूरे होने पर समापन समारोह के अवसर पर तथा पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य तिथि पर 'मेत्ताविहारिणी माताजी' एवं 'सयाजी जर्नल' से कुछ प्रेरणास्पद अंश यहां प्रकाशित कर रहे हैं।)

माताजी के जीवन की कुछ झांकियां

महापुरुष की महान सहधर्मिणी माताजी

हम सन 1942 के एक विवाह-प्रसंग में चलते हैं। मारवाड़ी समाज में विवाह का एक प्रसंग जब वर (दूल्हे) ने एक ऐसी शर्त रखी कि कन्यापक्ष में सन्नाटा छा गया। क्या दूल्हे ने दहेज मांगा था? कार या रुपये या सोना-चांदी माँगा था? नहीं भाई, नहीं। दूल्हे ने दृढ़तापूर्वक यह शर्त रखी थी कि विवाह-इच्छुक कन्या को जब शादी के मंडप में लाकर बैठाया जाय, तब उसका मुख खुला रखना होगा, अन्यथा वह स्वयं विवाहमंडप में प्रवेश ही नहीं करेगा। यह वह जमाना था जब मारवाड़ी समाज में नववधू को इस तरह कपड़ों की पोटली-सी बनाकर बैठाया जाता था कि उसका नाखून भी न दिखे। ऐसी हालत में बिना घूंघट के नववधू को बिठाने की बात सन्नाटा लाने वाली ही थी। परंतु दूल्हे का दृढ़ निश्चय एवं आग्रह देखकर, मन मारकर संबंधियों ने मांग पूरी की। बधू को बिना घूंघट के लाकर बैठाया गया और विवाह-विधि संपन्न हुई।

ये वर थे श्री सत्यनारायण और वधू थीं श्रीमती इलायची देवी। इलायची देवी अपने पति से छ: वर्ष छोटी थीं। 3 फरवरी, 1930 में वसंत पंचमी के दिन उनका जन्म मांडले में हुआ जो ब्रिटिश शासन के पूर्व म्यंमा के नरेश मिन डो मिन की राजधानी थी। माताजी का घर गोयन्का परिवार के पास ही था और दोनों परिवारों में भाईचारा था। दोनों एक-दूसरे के सुख-दुःख के साथी थे। बारह वर्ष की कच्ची उम्र में उनकी शादी हुई।

उस समय की सामाजिक प्रणाली के अनुसार सगाई होने के बाद उन्हें स्कूल में पढ़ने नहीं दिया गया। श्री गोयन्काजी को इस बात का रंज रहा कि उनके पिता ने उनके मन की बात जाने बिना एक अनपढ़ लड़की से उनकी शादी करवा दी। वैसे श्री गोयन्काजी स्वयं स्वामी दयानंद सरस्वती (आर्यसमाज के प्रणेता) से प्रभावित थे और पच्चीस वर्ष की उम्र से पहले शादी ही नहीं करना चाहते थे। परंतु बड़े-बुजुर्गों की इच्छा के आगे उनकी एक न चली और अठारह साल की उम्र में शादी करनी पड़ी। विद्या-व्यसनी गोयन्काजी अपने प्रति होने वाले अन्याय की मित्र समान अपने दोनों बड़े भाइयों से शिकायत की। पर वे भी क्या कर सकते थे?

ऐसी हालत में सामान्यतया पति अपना सारा गुस्सा पत्नी पर उतारते हैं। पर गोयन्काजी समझदार थे। वे जानते थे कि इसमें उनकी पत्नी का कोई दोष नहीं, बल्कि दोष है उस सामाजिक व्यवस्था का, जिसने स्त्रियों को पर्दे के पीछे ढकेल दिया है और उन्हें शिक्षा से वंचित कर दिया है। गोयन्काजी पत्नी को शिक्षित करना चाहते थे। उनके अपने पास तो इसके लिये समय न था कि कुटुंबीजनों की हाजिरी में पत्नी को पढ़ा सकें। ऐसा वातावरण भी न था। अत: उन्होंने अपने मित्र व पारिवारिक चिकित्सक डॉ. ओमप्रकाश की सुशिक्षित पत्नी की मदद मांगी और भाई चौथमल गोयन्का की पत्नी ने भी सहयोग दिया। ये दोनों महिलाएं आकर गोयन्का परिवार की महिलाओं को पढ़ाने लगीं। धीरे-धीरे छोटी-बड़ी उम्र की करीब 15-20 महिलाओं का एक छोटा-सा स्कूल घर में ही चलने लगा।

इलायची देवी ने पुस्तकीय शिक्षण तो प्राप्त किया ही, पर अपने पति के साथ रहकर विपश्यना की साधना भी गहराई से की। और जब श्री गोयन्काजी ने भारत में आकर विपश्यना सिखाना शुरू किया, तब वे भी उनके कदम से कदम मिला कर चलने लगीं। वे सच्चे अर्थों में श्री गोयन्काजी की सहधर्मिणी बनकर रहीं। विपश्यना शिविरों में, सार्वजनिक कार्यक्रमों में, वे श्री गोयन्काजी के साथ रहीं। साधिकाओं के साथ व्यक्तिगत मुलाकात हो या प्रश्नोत्तरी; शून्यागार में साधिकाओं की चेकिंग हो या ध्यानकेन्द्रों का निरीक्षण; प्रवचन हो या किसी परामर्श का अवसर, सर्वत्र इलायची देवी श्री गोयन्काजी के साथ छाया की तरह रहीं। कभी किसी परिवारिक या अन्य कारण से वे साथ में न रही हों, ऐसे अवसर उँगलियों पर गिने जा सकते हैं।

मुझे उनसे व्यक्तिगत मुलाकात का अवसर मिला तो मैंने पूछा? "क्या दाम्पत्य जीवन के दरमियान आप दोनों में झगड़ा होता था?"

"नहीं, उनका स्वभाव पहले से ही बहुत गंभीर रहा। कोई उनके साथ चाहे जैसे

• रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

ढंग से बोल नहीं सकता था। वे घर में प्रवेश करें तो घर में वातावरण गंभीर हो जाय। पहले सभी उनसे डरते थे। पर अपशब्द बोलना या लड़ना झगड़ना उनके स्वाभाव में नहीं था। पहले उनको क्रोध आता था, चिल्लाते थे। पर विपश्यना साधना के अभ्यास के बाद उन्होंने चिल्लाना बंद कर दिया। अब मात्र एक दो वाक्यों में अपनी नाराजगी वे व्यक्त कर देते हैं। उनके स्वभाव में से उग्रता चली गई है।

मैंने उनसे किसी खास शौक के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि सिलने, बुनने भर का शौक था। नई-नई डिजाइन के कई हाथ से झलने वाले पंखे बनाये। पर बिजली के पंखे आ जाने के बाद यह शौक छूट गया।

इलायची देवी बहुत कम बोलतीं पर साधना के क्षेत्र में उन्होंने काफी ऊँचाइयां हासिल की थीं। उन्होंने अपने संस्कारी, शांत, उदार स्वाभाव से सभी परिजनों का मन जीत लिया। देवर, जेठ, ननदें सभी उनकी प्रशंसा करते नहीं थकते।

सेवाभावी, सीधी, सरल, साधना में तल्लीन इलायची देवी अपने पति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलीं और सहधर्मिणी शब्द को सचमुच सार्थक किया। – सावित्री व्यास -----

माताजी का सयाजी से संवाद

प्रश्न:- क्या आप सयाजी से अपनी प्रथम भेंट के बारे में हमें कुछ बतायेंगी?

उत्तर:- "गोयन्काजी के प्रथम शिविर करने के बाद मैं केंद्र पर गयी और सयाजी से मिली। सयाजी ने उसी समय मुझे आनापान दिया और कभी-कभी मैं आनापान करने लगी। लेकिन केवल आनापान से मुझे सिर में बहुत भारीपन की अनुभूति होने लगी। सयाजी ने गोयन्काजी से कहा कि मैं भी दस दिवसीय शिविर में बैठूं, यह महत्त्वपूर्ण है और गोयन्काजी की प्रगति में भी बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।"

सचमुच इतने सालों के बाद वह बात अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। पू. गुरुजी के धर्म प्रसार के महान कार्य में पू. माताजी ने नींव की ईंट की भांति साथ देकर वह सिद्ध किया। जैसे नींव की ईंट बाहर कहीं दिखती नहीं है, पर खुद मजबूत बनकर इमारत को खड़ी रखती है, ठीक उसी तरह पू. माताजी ने भी पू. गुरुजी का हर कदम पर साथ देकर यह सिद्ध कर दिया जो अत्यंत सराहनीय बात है।

पू. माताजी थोड़े में बहुत कुछ पकड़ लेतीं और अपने जीवन में अपना लेतीं। इसका एक उदाहरण देखें।

प्रश्न: सयाजी बर्मी और अंग्रेजी में बोलते थे, लेकिन आप हिंदी। आप वार्तालाप कैसे करती थीं? प्रवचन कैसे लगते थे?

उत्तर: "सयाजी ज्यादा बात नहीं करते थे। टूटी-फूटी हिंदी के साथ इशारों से वे पूछते और इशारों एवं अपनी हिंदी में मैं जवाब देती और वे समझ जाते। वे धर्म प्रवचन बहुत संक्षेप में देते थे। सिर्फ पंद्रह से तीस मिनट तक। गोयन्काजी भारतीय साधकों के लिए कुछ पंक्तियों का अनुवाद कर देते। मुख्य बात यह थी कि उन्होंने रास्ता बता दिया था और काम कैसे करना है, यह बता दिया था। फिर तो काम ही करना था।" है न एकदम सरल। माताजी की मान्यता एकदम सही है, हमें बातों से ज्यादा काम करना चाहिए। – इंदिरा ब्रह्मभट्ट -----

पूज्य माताजी का देशप्रेम

पूज्य माताजी द्वारा पं. जवाहरलाल नेहरू को म्यंमा से लिखा 14 नवंबर, 1962 का एक पत्र :—

पूज्य जवाहरलाल जी, जय हिंद!

जन्मदिवस की बधाइयों के साथ एक छोटी-सी भेंट भिजवा रही हूं। कृपया स्वीकार कीजिए और देश की महँगी आजादी को कायम रखने के लिए हिमालय के आंचल में राक्षसी ताकतों से लड़ने वाले हमारे वीर सिपाहियों की सेवा में इसका उचित इस्तेमाल कीजिए। दहेज में प्राप्त हुए मेरे ये सारे जेवर यदि खूंखार दुश्मनों को देश की पावन धरती से एक इंच भी पीछे धकेलने में सहायक सिद्ध हुए तो इसे मैं अपना सौभाग्य समझूंगी। हर एक महिला की तरह आभूषणों की चाहत मुझे भी है। परंतु जब देश की सीमा पर काले बादल मँडरा रहे हों, दुश्मन काले नाग की तरह फुंकार रहा हो तो मातृभूमि को बचाने की चाह के सामने और सारी चाहें तुच्छ हैं, हेय हैं। मैं भारत की संतान हूं और मेरे पूर्वज भामाशाह का आदर्श मेरी आंखों के सामने नाच-नाच उठता है। काश, देश के लिए मैं भी उनकी तरह अपना सर्वस्व बलिदान कर पाती।

इन आभूषणों का तोल बहुत थोड़ा है, (कुल 100 तोले के आसपास) परंतु विश्वास कीजिये मेरे हृदय की उमंगों का उमड़ता समुंदर बेतोल है। सरहद पर लड़ने वाले मेरे नौजवान भाइयों को कृपया सूचित कर दें कि वे अकेले नहीं हैं। भारत में बसने वाले चौवालीस करोड़ लोगों के बावजूद दुनिया के कोने-कोने में बसने वाले हजारों लाखों भारतीय भी उनके साथ हैं। हमारी स्नेहभरी मंगल कामनाएं उनके रक्त में उष्णता पैदा करें और हृदय में अगणित उत्साह जगाएं। मुझे दृढ़ विश्वास है कि आप के महान नेतृत्व में अंतिम विजय हमारी ही होगी। मैं बड़ी बेसब्री से उस दिन का इंतजार कर रही हूं जब दुश्मन का एक-एक सिपाही हमारी पवित्र धरती के बाहर खदेड़ दिया जायगा।

आदर लिए हुए, एक प्रवासी भारत-पुत्री, इलायचीदेवी.

विशेष सूचना—12 दिसंबर के अपने स्वीकारोक्ति-पत्र में प्रधानमंत्री कार्यालय के सचिव ने लिखा कि 5 दिसंबर के पत्र के साथ बैंक लाकर से आपकी ओर से 11 दिसंबर को हमें 2017.250 ग्राम स्वर्णाभूषण प्राप्त हुए। इसके लिए पूरा देश आपका आभारी है।.. ---

आदर्श मां-बापू का सतत सान्निध्य

जीवन के 39 वर्ष लगातार मां की छत्रछाया में रही और देखा कि मां ने किस प्रकार बड़े संयम और वात्सल्य से अपने परिवार को तथा धर्म-परिवार को बखूबी संभाला। 86 वर्ष की पकी अवस्था तक वे हर काम सोच-समझ कर, मैत्रीभाव तथा बड़ी ही निपुणता से करती रहीं और स्वयं को सदैव सक्रिय रखा। उनमें गजब की फुर्ती थी। थकान का नामोनिशान नहीं। न किसी से द्वेष और न ही किसी की बुराई करतीं।

मां के परिवार में सास, ननद, देवर-देवरानी, लड़के-बहुएं, पोते-पोतियां, परपोते-परपोतियां सभी हैं। सब को खूब स्नेह से मिलजुल कर रहने का पाठ पढ़ाया और प्रशिक्षित किया। वे अपनी सभी ननदों का भी बहुत ध्यान रखती थीं। अपना परिवार बड़ा होते हुए भी विधवा ननद और उनके लड़के को उन्होंने अपने साथ रखा। देवरानी को भी हरदम बहू जैसा रखा। देवरानी के गुजरने के बाद देवरजी को अपने परिवार के संग रखा। सभी छह बहुओं के पीहर वालों के साथ भी बहुत आदर सम्मान के साथ पेश आती थीं और उन सब को बहुत अच्छी लगती थीं। सभी लोग उनसे मिलने और दो बात करने के लिए लालायित रहते थे।

बीस वर्ष की उम्र तक जन्म देने वाले मां-बाप ने संभाला था। यहां आने पर मां-बाबूजी ने अपने परिवार में बहुत ही स्नेह से संभाला और बहुत प्यार से हमारा पालन-पोषण किया। हमें विपश्यना सिखायी ताकि हम अपने जीवन में सुख-शांतिपूर्वक रह सकें। मैं किसी भी बात पर बहुत जल्द घबरा जाती थी। विपश्यना करने से उसमें कमी आयी। फिर भी जब कभी घबराहट होती, तो मां बहुत स्नेह और धैर्य से दूर कर देतीं। मुझे याद नहीं कि उन्होंने कभी खराब शब्दों का इस्तेमाल किया हो या गुस्से से पेश आयी हों। उन्होंने किसी के साथ कभी कोई भेदभाव नहीं किया। पूरे संयुक्त परिवार को एक समान देखतीं और एक जैसा व्यवहार करती थीं।

उन्होंने हमें संयुक्त परिवार में सुखी जीवन जीने की कला सिखायी और यह शिक्षा दी कि हम सभी छह देवरानी-जेठानियां कैसे मिलजुल कर प्रेम से रहें और कैसे एक-दूसरे की बातों का सम्मान करें। हमें सिखाया कि अपने से छोटे या बड़े का अपमान कभी भूल कर भी नहीं करना। कभी किसी को कटु जवाब भी नहीं देना। परिवार में कोई भी चीज आयगी तो सब के लिए आयगी। खाना बनाते समय परिवार के सभी लोगों की पसंद और स्वास्थ्य का ख्याल रखते हुए खाना बनेगा। सब लोग टेबल पर एक साथ बैठ कर खाना खायेंगे। परिवार का कोई भी सदस्य बीमार हो जाय तो शेष सबको उसका पूरा ध्यान रखना है। वे स्वयं भी हमारी बीमारी में खूब सेवा करतीं। घर का काम-काज, हिसाब-किताब सब को समानरूप से सौंपतीं, जिससे हमें गृहस्थी संभालने में कभी कोई कठिनाई नहीं महसूस हुई। उन्होंने हम सब बहुओं को एक आदर्श गृहिणी बनना सिखाया।

घर में आने-जाने वालों का तांता लगा ही रहता। उन लोगों की आवभगत कैसे करनी, उनके साथ कैसा व्यवहार करना, कैसे नम्रता से पेश आना आदि का वे बहुत अच्छा पाठ पढ़ाया करतीं। मेहमानों की देखभाल के लिए "अतिथि देवो भव" को अक्षरश: आजीवन निभाया। हरदम बोलतीं कि बड़े भाग्य से किसी के घर में मेहमान आते हैं। वे हमें दान देने के लिए भी सदैव प्रोत्साहित करती रहतीं। परिवार में छोटी-छोटी बातों का खूब ध्यान रखतीं। कभी किसी से कोई अनबन हो जाती तो बड़ी चतुराई से उसका समाधान निकाल लेतीं। हमेशा कहतीं कि सुख के साथी तो सभी होते हैं पर जो दु:ख में साथी हो वही सही माने में साथी है।

मां ने पूज्य बाबूजी का एक आदर्श पत्नी के रूप में बखूबी साथ निभाया। हर काम में बाबूजी का तन-मन से खूब साथ दिया। मन पर कभी कोई सिकन नहीं आने दी। हर पल बाबूजी के साथ रह कर विपश्यना में अपना पूरा योगदान दिया। परिवार के

प्रति कभी अपना मोह नहीं जताया। शादी के तुरंत बाद बर्मा से भारत की बहुत कठिनाईपूर्ण यात्रा होने पर भी वे विचलित नहीं हुयीं। किशोर पोता, ज्येष्ठ पुत्र तथा बाबूजी का भी शरीर जब शांत हुआ तब उन्होंने बहुत धैर्य के साथ असीम संयम का परिचय दिया। कभी विलाप नहीं किया। सदा मंगल मैत्री ही प्रेषित करती रहीं।

बाबूजी की वृद्धावस्था में उनकी खूब देखभाल की। उनके भोजन का, डॉक्टर की दवाइयों का, कपड़ों आदि पूरा ध्यान रखा। प्यारभरे और मैत्रीभरे चित्त से ब-खूबी बाबूजी का साथ दिया। हरदम एक आदर्श पत्नी बनी रहीं। कभी किसी वस्तु की शिकायत नहीं की। यह सब हमें बहुत प्रेरणा देता है।

मैं अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझती हूं कि मुझे ऐसे मां-बापू का सतत सान्निध्य मिला, वृद्धावस्था में आखिरी क्षणों तक उनकी देखभाल करने आदि का सुअवसर प्राप्त हुआ। ऐसे मां-बापू को शत-शत वंदन।" – नैना गो. ---------

पूज्य गुरुजी-माताजी का फूल व पेड़-पौधों से लगाव

गुरुजी और माताजी को हरियाली बहुत पसंद थी। 1976 में हैदराबाद की हरियाली देख कर लौटे तो धम्मगिरि में बहुत सारे पेड़-पौधे लगवाये। बहुत से स्वतः उगने वाले पेड़ों के बीज मँगवाए और जमीन में डलवाये ताकि यहां भी हरियाली सर्वत्र फैल जाय। वन-विभाग के लोगों को बुलवा कर उनसे भी सलाह लेते और वैसा करने के लिए आवश्यक निर्देश देते। कुछ समय बाद पूरा क्षेत्र घने पेड़-पौधों से लहलहाने लगा, जबकि यहां कुछ आम के बड़े पेड़ों के अतिरिक्त बिल्कुल उजाड़ था। कुछ ऐसे पौधे जो वर्ष भर बिना पानी दिये भी हरे-भरे रहते हों, उन्हें प्राथमिकता दी। हरियाली के साथ-साथ आवश्यक निर्माणकार्य भी चलते रहे।

कोई व्यक्ति फूल लाकर गुरुजी को देता तो यही कहते—"ये बेचारे फूल तो डाली पर ही अच्छे लगते हैं। इन्हें मेरे लिए तोड़कर गलत काम किया। भविष्य में ऐसा कभी न करना। डाली पर लगा रहता तो कुछ दिन और जीवित रहता, जबकि यहां तो अभी मर जायगा"।

ऐसे ही जब कभी वे दोनों घूमने के लिए बाहर निकलते तो सबसे पहले निवास के बाहर खिले फूल व पेड़-पौधों को हाथ से छूकर मैत्री देते और बहुत से पेड़ों पर हाथ रखकर मैत्री देते हुए, उन पर रहने वाले दृश्य-अदृश्य सभी प्राणियों को मैत्री देते। वे कहते थे- अनेक अदृश्य प्राणी इन पेड़-पौधों पर वास करते हैं इसलिए उन्हें काटना या नुकसान पहुँचाना बहुत बुरा काम है। बहुत आवश्यक होने पर ही किसी पेड़ को वहां से हटाने की स्वीकृति देते। काटने से पहले वे हर पेड़ के पास खड़े होकर मैत्री देते। उस पर रहने वाले अदृश्य प्राणियों से निवेदन करते कि आप लोग यहां से चले जायँ। इसे काटना जरूरी हो गया है। इस प्रकार नम्रतापूर्वक मैत्री देकर ही किसी पेड़ पर कुल्हाड़ा लगाने की अनुमति देते थे। उनके ये शब्द बहुत धीमे स्वर में होते हुए भी हम पीछे खड़े सुन सकते थे। धम्महॉल और पगोडा पर तथा उसके आसपास न जाने कितने असंख्य देव, ब्रह्मादि प्राणियों का वास होता है। अतः वे सदैव पगोडा पर रात भर रोशनी रखने की बात करते थे।

पूज्य माताजी का बागवानी से विशेष लगाव का जिक्र करना भी आवश्यक लगता है। वे अपने घर के बगीचों को स्वयं सींचती, अपने हाथों से गमलों में खाद व मिट्टी भर कर पौधों को लगातीं। जुहू के बँगले में माली को साथ लेकर पौधों की देखभाल करती थीं। बंगले की सीमा-दीवाल के ऊपर पक्की नाली जैसे गमले बनवा कर, उसमें खाद-मिट्टी डलवा कर फूल एवं हरियाली वाले पौधे, लताएं आदि लगवायीं जो पड़ोसियों तक के मन मोह लेती। तत्पश्चात जब वे 13वें एवं 14वें तल पर बने फ्लैटों में आयीं तो वहां के खुले टैरेसों पर भी उन्होंने फूल-पौधों का अंबार लगा दिया। -----

बिहार के राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद को आशीर्वाद

भारत के वर्तमान महामहिम राष्ट्रपति महोदय उस समय बिहार के राज्यपाल थे। वे किसी कार्यवश मुंबई आये तो 25-12-2015 को पगोडा पर जाने का कार्यक्रम बन गया। पगोडा बहुत अच्छा लगा परंतु वहां उन्हें पता चला कि पूज्य माताजी अस्पताल में हैं। एक साधक होने के नाते उन्होंने तुरंत उनसे मिलने का कार्यक्रम बना लिया। वे अपने भाई के साथ लीलावती अस्पताल पहुँचे तो माताजी आईसीयू में गंभीर अवस्था में थीं। आंखें खोलकर किसी को देख भी नहीं सकती थीं। श्रीप्रकाश गोयन्का ने जब माताजी के पास जाकर कहा, "मां, महामहिम राज्यपाल श्री कोविंदजी आप से मिलने और आशीर्वाद लेने आये हैं।" माताजी उन्हें जानती थीं अतः उन्होंने आशीर्वाद की मुद्रा में अपना हाथ थोड़ा-सा ऊपर उठाया परंतु आंखें नहीं खोल पायीं। इतना भी उनके लिए पर्याप्त था। बड़ी प्रसन्नमुद्रा में उन्होंने पुनः प्रणाम किया। फिर डॉक्टरों के कमरे में बैठ कर कुछ देर चर्चा करके वापस लौट गये। ----

माताजी के अंतिम क्षण

"माताजी का प्यार और मेरा सौभाग्य ही था कि जब वे अस्पताल में थीं, तब मैं कुछ दिनों के लिए पटना से इगतपुरी आया और फिर उनकी सेवा में लग गया। वहां शरीर छोड़ने के एक दिन पूर्व मैंने अपना नाम लेकर कहा, "माताजी, यादव का प्रणाम स्वीकार करें!" क्योंकि उनकी आंखें बंद ही रहतीं थीं। परंतु मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने तुरंत आंखें खोल दीं और मुस्करा कर मेरा अभिवादन स्वीकार किया। इसके पहले अस्पताल में कभी उन्हें मुस्कराते हुए नहीं देखा था। कभी कोई दवा आदि देना होता तो मुँह खोल देतीं, दवा निगल जातीं पर और कोई भाव न प्रकट होते। उस दिन मुस्कराने का तात्पर्य यही समझा कि वे पूर्णतया सजग हैं और सब को पहचानती भी हैं। इससे मन प्रसन्नता से भर गया। फिर मैंने कह दिया कि माताजी अब आप बिल्कुल ठीक हो जायँगी। मन को मजबूत रखें। इसे सुन कर वे कुछ क्षण मुझे एकटक निहारती रहीं और फिर धीरे से सिर हिला कर "ना" कहा और आखें बंद कर लीं। प्रतिदिन रात में मैं अस्पताल में ही रहता और वहीं सोता था पर उस दिन उनके किसी एक पोते ने कहा कि आज रात को मैं यहां रहूंगा, आप घर चले जाओ। अत: मैं गुरुजी के निवास पर चला गया।

उसी रात उनकी हालत गंभीर हो गयी। रात में 1 बजे हम लोग अस्पताल पहुँचे परंतु तब तक वे पूर्ववत हो चुकी थीं। अतः हम वापस लौट आये। फिर सुबह होते-होते डॉक्टरों ने हाथ ऊपर कर दिये। अंदर के सभी अंग ढीले होकर काम करना बंद कर चुके थे परंतु चेहरे पर न कोई तनाव, न खिंचाव। डॉक्टरों को आश्चर्य हो रहा था कि इतनी शांति कैसे है? पर साधना की गहनता को वे भला कैसे समझ पाते!" – यादव. ---------

सत्ता के बीच सरलता और सद्गुणों का व्यक्ति

सयाजी के कार्यकाल में भी बर्मा के कुछ उच्च पदों पर रहे लोग अपने शेष जीवन को सुविधा संपन्न बनाने के लिए रिश्वत लेकर धन अर्जित करते थे भले ही पद के अनुरूप उनका वेतन न हो। इन कार्यालयों से कोई भी गरीब होकर नहीं निकला। तथापि सयाजी अपने सेवा-निवृत्त जीवन में अल्प बचत के साथ प्रविष्ट हुए। उनके परिवार के लिए घर भी नहीं था क्योंकि जीवन भर वे सरकारी आवासों में रहे। यद्यपि उन्होंने सरकार के चार-चार विभागों में एक साथ कार्य किया था परंतु वेतन एक का ही लिया और सभी अवैध प्राप्ति को टालते रहे। *(क्रमशः- पृ. 8 पर)*

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री जनक राज अधिकारी, क्षेत्रीय समन्वयक आचार्य की सहायता- स.आ. प्रशिक्षण कार्य में।

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री घनश्याम गौतम (U Soe Thu) म्यंमा
2. U Tin Maung, Myanmar
3. U Tun Tun Oo, Myanmar
4. U Win Myint, Myanmar
5. Mrs. Poy-Twee Leow of Malaysia
6. श्रीमती बिस्नु मायादेवी आर्यल, नेपाल
7. ले.ज. (अव.) दुर्गा नाथ आर्यल, नेपाल
8. कु. सबिता बज्राचार्य, नेपाल
9. कु. फूलु डंगोल, नेपाल
10. श्री टिकाराम लमसल, नेपाल
11. श्री बेखामान महर्जन, नेपाल
12. श्री गोपालदास महर्जन, नेपाल
13. श्री कमल प्रसाद प्रधान, नेपाल
14. श्री शंकर राज शाक्य, नेपाल
15. श्री तेज राज शाक्य, नेपाल
16. श्रीमती विद्या शाक्य, नेपाल
17. श्री सुरेश लाल श्रेष्ठ, नेपाल
18. श्रीमती शर्मिष्ठा उदास, नेपाल
19. श्रीमती गीता देवी पोखरेल, नेपाल
20. अनागारिका सोना, नेपाल

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्रीमती मंगला मेश्राम, नागपुर
2. श्री राम नरेश मौर्या, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
3. श्रीमती गीता रेगमी, नेपाल
4. कु. सुमित्रा राजकरनीकर, नेपाल
5. श्री मेघराज ज्ञानवली, नेपाल
6. श्री सानू राजा रनजीतकर, नेपाल
7. श्री सुबर्ण मान बज्राचार्य, नेपाल
8. श्री सुरेश शाक्य, नेपाल
9. Daw Lay Sint, Myanmar
10. Daw Mya Win, Myanmar
11. U Maung Kaung, Myanmar
12. U Khin Saung Nyunt, Myanmar
13. U Kyi Ohn, Myanmar
14. Daw Nang Kham, Myanmar
15. Daw Khin Ohn Myint, Myanmar
16. Daw Nwe Nwe Aye, Myanmar
17. Daw Tin Tin Mya, Myanmar
18. Daw Yi Yi, Myanmar
19. Mr. Xiao Feng Liu, China
20. Mr. Jian Chuan Zhang, China
21. Mr. Zheng Yuxin, China
22. Mr. Ming Chen, China
23. Ms Lay-Jan Koh, Malaysia
24. Mr William Tham, Singapore

बाल-शिविर शिक्षक

1. श्रीमती लीता हजारिका, गुवाहाटी
2. श्रीमती गीतांजलि लुखुरखन, गुवाहाटी
3. Miss Lee Paolien, Taiwan
4. Mrs. Lin Chiehlin, Taiwan
5. Miss Ciara Bruton, Ireland

अपने बच्चों के लिए मकान निर्माण की इच्छा से उन्होंने मुझसे निर्माण व्यवस्था करने को कहा था। मकान का निर्माण कार्य आगे बढ़ने पर हमने देखा कि उसे पूरा करने के लिए दस हजार रुपये कम पड़ रहे थे। सयाजी को कहां से मिलती इतनी धनराशि? वे तो किसी से मांगेंगे नहीं। चूंकि यह राशि देना मेरे लिये बहुत सहज था, मैंने सुझाया परंतु उन्होंने यह कहते हुए मना कर दिया कि एक साधक से प्राप्त राशि दान कहलाती है और इसलिए धर्म के उचित प्रयोजन में ही उसे लगना चाहिए। अन्य तरीके से प्रयास करते हुए मैंने उन्हें धन उधार देने का प्रस्ताव यह सोच कर किया कि बाद में उन्हें भुगतान न करने दूंगा। उन्होंने मेरा प्रस्ताव स्वीकारा और मकान पूरा हुआ।

फिर तो उन्होंने हर माह जैसे ही उनका पेंशन का चेक आता तो उसमें से एक पैसा लिये बिना तुरंत पूरा मुझे दे देते थे। उसे स्वीकारना मुझे बड़ा दु:खद लगता था। मेरे लिए यह दस हजार की राशि कितनी थोड़ी थी परंतु प्रतिमाह मुझे अपने गुरु की एकमात्र पूरी आय ग्रहण करनी पड़ रही थी। अंतत: पांच हजार रूपये बचे रह गये। इस दौरान मेरी चाची (जिसने मुझे गोद लिया था और जो दीर्घ काल तक सयाजी की शिष्या रही) मरणासन्न थी। सयाजी के साथ सात वर्षों की साधना में उन्होंने काफी प्रगति की थी। सयाजी को भी वे अच्छी लगती थीं। पूर्वी देशों में अभी भी एक प्रथा है कि अपने मां-बाप की जीवन भर केवल सेवा ही नहीं की जाय बल्कि मृत्यु के बाद उनके नाम से दान भी दिया जाय। अत: गोद लेने वाली मां के साथ अंतिम दिनों में मैंने उनसे पूछा कि क्या वे कहीं दान देना चाहती हैं? उन्होंने कहा "जहां तुम चाहो।" मैंने कई अस्पतालों, धर्मार्थ संस्थाओं आदि के नाम लिए। फिर पूछा, इसके अलावा भी कहीं देना चाहती हो? उन्होंने कहा कि वे पांच हजार रुपए सयाजी को देना चाहती हैं, तो मैं प्रसन्न हो गया। यह एक अवसर मिल रहा था कि मैं गुरु से धन ग्रहण करने की दु:खदायी स्थिति से बच सकता था। मैंने सोचा, निश्चितरूप से सयाजी यह दान स्वीकार कर लेंगे क्योंकि एक समर्पित मरणासन्न शिष्या की यह अंतिम इच्छा थी। वे इस प्रकार ऋण का पुनर्भुगतान भी कर सकते थे।

सयाजी उनकी मृत्यु के समय उपस्थित थे। वे जानते थे कि उनकी मृत्यु अपने सिर के सिरे पर अनित्य की अनुभूति के साथ शांति से हुई है। केंद्र लौटते हुए सभी साधकों से कहा भी, "कितने अनित्य और प्रज्ञा से परिपूर्ण थे उसके अंतिम क्षण"। जब मैंने उन्हें सूचित किया कि वे पांच हजार रुपये का दान उन्हें देकर गयी हैं तो वे प्रसन्न हुए और कहा-- "देखो, यह पांच हजार रुपए उसने दान दिये हैं"। और उन्होंने धर्म कार्य में यहां-वहां रुपए बांटना शुरू कर दिया। मैं आश्चर्यचकित था कि मेरी आशाएं कैसे समाप्त हो रही थीं। उसके बाद प्रतिमाह मैं अपने गुरु के पेंशन के चेक तब तक प्राप्त करता रहा जब तक अंतिम भुगतान पूरा न हो गया। और इस व्यक्ति के ऊंचे आदर्शों को याद करता रहा जो कि सार्वजनिक जीवन में नैतिक ईमानदारी का एक अनूठा उदाहरण था।

भ्रष्टाचार से लिप्त सत्ता के गलियारों, जहां प्राय: समृद्धि के ढेर आसानी से लग जाते हैं, से गुजरने के बाद भी सीमित साधनों का यह एकाकी व्यक्ति था जिसकी मृत्यु अपनी ईमानदारी की संपत्ति को सहेजते हुए हुई। – स. ना.गो.

— सयाजी ऊ बा खिन जर्नल से साभार. -----

ग्लोबल पगोडा में प्रतिदिन एक-दिवसीय शिविर एवं वर्ष के विशेष महाशिविर

रविवार 10 मई, बुद्ध-पूर्णिमा के उपलक्ष्य में; पगोडा में उक्त महाशिविरों का आयोजन होगा तथा **हर रोज एक-दिवसीय शिविर** चलते रहेंगे, जिनमें शामिल होने के लिए कृपया अपनी बुकिंग अवश्य करायें और सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **समय:** प्रात:11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3 से 4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग हेतु कृपया निम्न फोन नंबरों पर फोन करें अथवा निम्न लिंक पर सीधे बुक करें। **संपर्क:** 022-28451170, 022-62427544- Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक)
Online Regn: http://oneday.globalpagoda.org/register

दोहे धर्म के

कैसी सुखद सुहावनी, मां बरमा की गोद।
इस गोदी में ही मिला, बोधि धर्म का मोद॥

कैसी सुखद सुहावनी, मां बरमा की गोद।
चारों फल उपजें यहां, उमड़े मन में मोद॥

जीवन प्रफुल्लित रहे, सदा बसंत बहार।
शील स्नेह से जब भरे, सद्गृहस्थ परिवार॥

इस दुखियारे जगत में, होवे धरम प्रसार।
बैर भाव सबके मिटें, जगे प्यार ही प्यार॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धन वैभव परिवार मँह, कठै सुरक्छा नांय।
र'वै सुरक्छित धरम री, छत्तर-छाया मांय॥

पत्नी रो पालण करै, घर सुख संपद होय।
सांति रवै परिवार मँह, उत्तम मंगळ होय॥

ज्यूं इकलौते पूत पर, उमड़ै मां को प्यार।
त्यूं प्यारो लगतो रवै, मनै सकल संसार॥

बढै चित्त मँह प्यार ही, चढै चित्त मँह चाव।
दूर हुवै दुरभाव सब, जगै स्नेह सद्भाव॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2563, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 12 दिसंबर, 2019

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) (फुटकर बिक्री नहीं होती)

DATE OF PRINTING: 25 NOVEMBER, 2019, DATE OF PUBLICATION: 12 DECEMBER, 2019

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org